सारांश

लघु शोध परियोजना की आद्याधिक अंतिम प्रतिवेदन (Final Report)

मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में शिक्षा प्रभाव : राजस्थान के बीकानेर जिले का एक प्रतीकात्मक अध्ययन

(Educational Impact on Development socio-economic conditions of Muslim women : A case study of Bikaner District in Rajasthan)

शोध क्षेत्र राजस्थान के बीकानेर जिले का विश्व प्रसिद्ध थार मरूस्थल में स्थित होने के कारण मुस्लिम महिलाओं का शोध के लिये चयन किया गया है । बीकानेर जिले में मुस्लिम महिलाओं के आर्थिक सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास से पूर्व जिज्ञासाओं को शामिल किया गया है जैसे मुस्लिम समाज महिलाओं को उच्च शिक्षा से जोड़ता है तो न केवल महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा बल्कि शिक्षा प्राप्त महिलाऐं समाज की सामाजिक व सांस्कृतिक स्थिति को सुधारने में भी मील का पत्थर साबित होगी । इससे समाज में व्याप्त रूढिवादिता तो खत्म होगी ही इसके साथ समाज का जो बड़ा वर्ग अशिक्षा से जूझ रहा है उसमें भी एक क्रांतिकारी बदलाव आयेगा । एक शिक्षित महिला एक शिक्षित परिवार का निर्माण करती है । कुरआन शरीफ की पहली आयत ही शिक्षा को लेकर है और पैगम्बर मोहम्मद साहब की हदीसों में है कि "शिक्षा प्राप्त करने के लिए चाहे चीन ही क्यों न जाना पड़े शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए ।" इस्लाम प्रत्येक महिला को हक देता है कि वह हर प्रकार की शिक्षा ग्रहण करे । भारत के सभी राज्यों में मुस्लिम महिलाऐं एवं पुरूषों का शिक्षा में अनुपात गैर मुस्लिम पुरूष एवं महिलाओं से बहुत कम है । मुस्लिम समाज में महिला शिक्षा उस अनुपात में नहीं बढ़ पा रही है जिस अनुपात में अन्य धर्म की महिलाओं का शिक्षा में अनुपात बढ़ा है । शोध अंग बीकानेर जिले के भौगोलिक परिदृश्य के अन्तर्गत भौतिक एवं भौगोलिक अवयवों को सम्मिलित करते हुए

Scanned by CamScanner

प्राकृतिक सौन्दर्यता का खुलासा किया गया है जिसके अन्तर्गत उच्चावच, प्रवाहतंत्र, खनिज,मिट्टिया, वन्य जीव, प्राकृतिक वनस्पति एवं जलवायु आदि कारकों को सम्मिलित कर अध्ययन किया गया है । परन्तु समय के साथ बदलते परिवेश, उच्च शिक्षा तथा अन्य सुविधाओं की उपलब्धता के कारण **मरू नगरी बीकानेर** में निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है । मुस्लिम समाज में जनसंख्या के तहत जातिगत विवरण में मुस्लिम समाज के **सिपाही समाज** का स्थान प्रथम पायदान पर पाया गया है जबकि द्वितीय स्थान पर **सैयद समाज** तथा तृतीय स्थान पर **तेली तथा पड़िहार समाज** है तथा सबसे कम व अत्यअल्प स्थान पर नीलघर, कसाई व मच्छा के साथ–साथ धोबी, काजी, भिश्ति को भी शामिल किया गया है ।

मुस्लिम समाज की क्षेत्र में साक्षरता 54.62 प्रतिशत है वहीं निरक्षर जनसंख्या 45.38 प्रतिशत है । प्राथमिक शिक्षा में 47.68 प्रतिशत जनसंख्या है, उच्च प्राथमिक शिक्षा में 25.89 प्रतिशत , माध्यमिक शिक्षा में 12.26 प्रतिशत, उच्च माध्यमिक शिक्षा में 5.45 प्रतिशत और उच्च शिक्षा में 8.72 प्रतिशत है । इससे स्पष्ट होता है कि समाज में जैसे–जैसे उच्च शिक्षा की ओर कदम बढ़ते हैं शिक्षा का अनुपात घटता जाता है जिसका मुख्य कारण समाज को उच्च शिक्षा का महत्व पता नहीं है, बेरोजगारी और समाज में शिक्षित व्यक्तियों की संख्या कम होना है । समाज में इस्लाम से शिक्षा तो जरूरी है लेकिन व्यवहारिक शिक्षा से समाज आज भी इतनी प्रासंगिकता से नहीं जुड़ पाया है जैसे अन्य समाज शिक्षा के महत्व के अनुसार जुड़ा है । क्षेत्र में महिला साक्षरता 45.71 प्रतिशत है और प्राथमिक शिक्षा के बाद स्कूल छोड़ने वाली महिलाओं का प्रतिशत 25.43 प्रतिशत है इससे स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में समाज की महिलाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग अशिक्षा से जूझ रहा है वही जो महिलायें शिक्षित हैं वो भी लगभग प्राथमिक शिक्षा तक ही सीमित हैं इसका मुख्य कारण समाज में महिला शिक्षा का महत्व कम होना पाया गया हैं, रूढिवादिता के कारण उच्च शिक्षा की ओर मुस्लिम महिलाओं का अनुपात कम पाया गया हैं ।

Scanned by CamScanner

मुस्लिम समाज में महिलाओं का विवाह 22–25 आयु वर्ग में सर्वाधिक पाया गया है जो कुल जनसंख्या का 72.03 प्रतिशत है इससे स्पष्ट होता है कि समाज में बाल–विवाह जैसी कुरितियां कम पायी गयी है समाज में महिलाओं का विवाह वयस्क (18 वर्ष से अधिक) होने पर ही किया जाता है । मुस्लिम महिलाऐं विवाह के बाद पर्दा रखने के पक्ष में 95.00 प्रतिशत शोध में पाई गई हैं । इसका कारण शिक्षा की कमी व रूढिवादित का पाया जाना रहा है । मुस्लिम समाज धीरे–धीरे शिक्षा व सामाजिक जीवन में लगातार परिवर्तन देख रहा है जिससे पुरानी कुरितियां खत्म सी होती जा रही हैं । मुस्लिम समाज की महिलायें राजनैतिक गतिविधि में भाग नगण्य ही लेती है सर्वेक्षण से पता चलता है कि 95.00 प्रतिशत महिलायें राजनैतिक पार्टी के बारे में जानकारी नहीं रखती है । क्षेत्र की महिलायें राजनैतिक गतिविधि में भी नगण्य रूप से ही भाग लेती है इसका मुख्य कारण शिक्षा की कमी व महिलाओं को स्वतन्त्रता नहीं होना पाया गया है । समाज की महिलायें अपने धर्म इस्लाम में पूर्ण रूप से विश्वास रखती है और महिलाऐं इस्लाम धर्म के सभी प्रकार के नियमों की पालना भी करती पाई गई है । शोध क्षेत्र में अधिकांश महिलायें धार्मिक मान्यतानुसार रोजा रखने में विश्वास रखती है । सर्वेक्षण व शोध में पाया गया है कि मुस्लिम समाज में महिलाओं को इस्लामिक शिक्षा (उर्दू) दी जाती है जिससे वह इस्लाम के नियम, धर्म व रोजा जैसे कार्य को जान पाती हैं । मुस्लिम समाज की महिलायें आर्थिक गतिविधियों में कम ही रूचि रखती हैं आर्थिक कार्य जैसे–बैकिंग, घर का हिसाब, व्यवसाय आदि में जुड़ी हुई नहीं पाई गई हैं। इसका कारण शिक्षा की कमी, पुरूष प्रधान समाज का होना व महिलाओं का आर्थिक कार्यों में हिस्सेदारी का कम होना पाया गया है ।

परिकल्पना – मुस्लिम समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति दयनीय हैं एवं इसके साथ साथ आर्थिक स्थिति में भी काफी कमजोर है । सरकार द्वारा किये जा रहे इनके शिक्षा प्रसार हेतु शिक्षा प्राप्ति के केन्द्र भी आवश्यकता के हिसाब से बहुत कम अवस्थित है । मुस्लिम महिलाओं को प्रधानमंत्री के 15 सूत्री कार्यक्रमों का लाभ भी

Scanned by CamScanner

बहुत ही न्यून मात्रा में मिल रहा है । इसके अलावा मुस्लिम महिलाओं में आधुनिक शिक्षा के प्रति रूचि भी कम पाई गई । यहां तक कि मुस्लिम महिलाओं की बालिकाओं को छात्रवृति का लाभ भी कम मिल रहा है। पर्दा–प्रथा रिवाजों का प्रचलन अभी भी कायम हैं । मुस्लिम महिलाएं परिवार के निर्णय प्रकिया में सहयोगी नहीं होती है साथ स्वास्थ्य के बारे में भी पूर्ण रूप से सजग नहीं है । अशिक्षा व रोजगार के साधन नहीं होने के कारण मुस्लिम महिलाएं संयुक्त परिवार में ही रहना चाहती है ।

लक्ष्य एवं उद्धेश्य – मुस्लिम महिलाओं में शैक्षिक व्यवसायिक शिक्षा के स्तर का अध्ययन करना, इनके द्वारा किये जाने वाले आर्थिक कियाओं के बारे में विस्तार से जानना , समाज एवं परिवार में सामाजिक, राजनैतिक स्थिति का अध्ययन करना । सरकार द्वारा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है अथवा नहीं की जानकारी उपलब्ध करवाना, मुस्लिम महिलाओं के जीविकोपार्जन हेतु उनके द्वारा किये जाने वाले व्यवसायों से प्राप्त आय का अध्ययन करना मुख्य लक्ष्य उद्धेश्य है ।

समस्याऐं – मुस्लिम महिलाऐं परिवार में मुखिया के रूप में स्वतन्त्र नहीं हैं, सरकार द्वारा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी नहीं होने व उनके स्कूली शिक्षा की कमी होना, मुस्लिम समाज में महिलाओं में शैक्षिक चेतना को बढावा देना समाज व परिवार द्वारा उपेक्षा करना, बच्चों की कम उम्र में ही विवाह बन्धन में बांध दिया जाता हैं । इसके अलावा महिलाओं को उच्च शिक्षा से वंचित किया जाता हैं, आर्थिक सामाजिक की जंजीरों में जकड़ा जाता हैं फलस्वरूप समाज में महिलाएं आर्थिक रूप से अपने पैरों पर स्वतन्त्र रूप से खड़ी नहीं हो सकती है । मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा की कमी के कारण सरकारी सेवाओं में आनुपातिक अनुपात नही के बराबर है ।

सुझाव – मुस्लिम समाज की महिलाओं को जनसंख्या नियत्रण हेतु परिवार नियोजन पर ध्यान देना चाहिए । सामाजिक व पारिवारिक महत्व को बढ़ाना चाहिए, संयुक्त परिवार व्यवस्था पर जोर देना, आधुनिक शिक्षा के स्तर को अधिक बढ़ावा देना,

Scanned by CamScanner

मुस्लिम समाज में व्याप्त कुरूतियों को खत्म करना चाहिए । समाज में महिलाओं में राजनैतिक चेतना जागृत करनी चाहिए । चूंकि मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा की अत्यधिक कमी हैं फलस्वरूप उन्हें उच्च स्तर की शिक्षा के अनुपात में वृद्धि करनी चाहिए ।

जाँच के परिणाम– मुस्लिम महिलाओं में लिंगानुपात में कमी पायी गयी हैं । चूंकि अशिक्षा के कारण वे अपने स्वास्थ्य पर पूरी तरह ध्यान नहीं दे पाती हैं अतः समाज में जन्मदर उच्च पाई गयी है । मुस्लिम महिलाओं में परिवार की संख्यात्मक संरचना उच्च पायी गयी है । चूंकि समाज की महिलाओं में निरक्षता अत्यधिक हैं अतः महिलाओं में उच्च शिक्षा की ओर अग्रसरता की कमी पाई गई है । अशिक्षा के कारण शिक्षा के प्रति अनिच्छा है प्राथमिक शिक्षा के बाद स्कूल छोड़ने वाली बालिकाओं की संख्या अधिक पाई गई हे ।

मुस्लिम समाज की महिलाओं में इस्लाम की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाना पाया गया है फलस्वरूप समाज की महिलाओं में पर्दा–प्रथा एवं राजनैतिक जागृति की कमी पायी गयी है । चूंकि अशिक्षा के कारण राजनैतिक जागृति की कमी है अतः महिलायें सिर्फ घरेलू कार्यों में भाग लेती सर्वाधिक पायी गई है । मुस्लिम समाज की महिलायें स्वतंत्र रूप से आर्थिक कार्यों की संलग्नता में भी भारी कमी पाई गई है ।

21/8/18

(डॉ. बी. एल. जाटव)
प्रमुख अन्वेषक

Scanned by CamScanner